आयतुल कुर्सी की तासीर

मिस्बाह कफ़अमी में जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से मंकूल है कि जो शख़्स आयतुल कुर्सी पाबन्दी से पढ़ेगा ख़ुदावन्दे आलम उसके क़ल्ब को हिकमत, ईमान, ख़ुलूस, तवक्कुल और वक़ार से भर देगा और जो इसको आबे ज़मजम या आबे बारां से लिख कर पियेगा उसके जिस्म से हर बीमारी दूर हो जायेगी नीज़ वस्वसा-ए-शयातीन और निस्यान से नजात पायेगा और जो इसको तावीज़ बनाकर पहनेगा वह जानवराने वहशी, हशरातुल अर्ज़, सेहर और हर मर्ज़ से बचा रहेगा और जो आयतुल कुर्सी का विर्द करेगा वह अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहेगा।

आयतुल कुर्सी

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

आयतुल कुर्सी

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला

ख़ुदा ही वह ज़ात (पाक है कि) इसके सिवा

हुवल हय्युल क़य्यूमु ला

कोई माबूद नहीं (वह) ज़िन्दा है (और) सारे

तअख़ुजुहु सि-नतुंवला

जहां का संभालने वाला है उसको न ऊँघ

नौम० लहू मा फ़िस

आती है न नींद, जो कुछ आसमानों में है और

समावाति वमा फ़िल अर्ज़ि

जो कुछ ज़मीन में है (गर्ज़ सब कुछ) उसकी

मन ज़ल्लज़ी यश्फ़उ अ़िन्दहू

का है कौन ऐसा है जो बिदूने उसकी इज़ाजत

इल्ला बि इज़्निहि यअ़ल-मु

के उसके पास (किसी की) सिफ़ारिश करे, जो

मा बै-न ऐदीहिम वमा

कुछ उनके सामने (मौजूद) है (वह) और जो

ख़ल्फ़हुम वला युहीतू-न बि

कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (ख़ुदा सब को)

शैइम्मिन अ़िल्मिहि इल्ला

जानता है और वह लोग उसके इल्म में से

बिमा शा-अ। वसि-अ
किसी चीज़ पर भी एहाता नहीं कर सकते मगर
कुरसिय्युहुस्समा वाति
वह (जिसे) जितना चाहे (सिखा दे) उसकी
वलअर्ज़ वला यऊदुहू
कुर्सी आसमानों और ज़मीनों को घेरे हुए है
हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल
और इन दोनों (आसमान व ज़मीन) की
अ़ज़ीम० ला इक्रा-ह
निगहदाश्त उस पर (कुछ भी गिरां) नहीं और
फ़िद्दीन० कद तबय्य-य-नर
वह बड़ा आली शान व बुज़ुर्ग मर्तबा है, दीन में
रुश्दु मिनल ग़य्यि फ़ मयं
किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं क्योंकि हिदायत
यक्फ़ुर बित्ताग़ूति व युअमिम
गुमराही से (अलग) ज़ाहिर हो चुकी है तो जिस
बिल्लाहि फ़-कदिस तम-स-क
शख़्स ने झूठे ख़ुदाओं (बुतों) से इंकार किया
बिल अ़ुरवतिल वुस्क़ा
और बस ख़ुदा ही पर ईमान लाया तो उसने

लन्फ़िसा-म लहा० वल्लाहु
वह मज़बूत रस्सी पकड़ ली जो टूट ही नहीं
समीअुन अ़लीम० अल्लाहु
सकती और ख़ुदा (सब कुछ सुनता और)
वलिय्युल लज़ी-न आमनू
जानता है, ख़ुदा उन लोगों का सरपरस्त है जो
युख़्रिजुहुम मिनज़्ज़ुलुमाति
ईमान ला चुके कि उन्हें (गुमराही की)
इलन्नूर० वल्लज़ी-न क-फ़-रु
तारीकियों से निकाल कर (हिदायत की) रौशनी
औलियाउहुमुत्ताग़ूतु
में लाता है, और जिन लोगों ने कुफ़्र अख़्तियार
युख़्रिजूनहुम मिनन्नूरि
किया उनके सरपरस्त शैतान हैं कि उनको
इलज़्ज़ुलुमाति ऊलाइ-क
(ईमान की) रौशनी से निकाल कर (कुफ़्र की)
अस्हाबुन्नारि हुम फ़ीहा
तारीकियों में डाल देते हैं, यही लोग तो
ख़ालिदून०
जहन्नमी हैं (और) यही इसमें हमेशा रहेंगे।

आयतुल कुर्सी